प्राचीनायुर्वेद ग्रन्थ-माला

प्रथमं पुष्पम् ।

बौद्ध वैद्यकम्

तथा

जीवक जीवनम् ।

लेखक :—

वैद्यभूषण पं० रामगोपाल शास्त्री

अथर्ववेदीय बृहत्सर्वानुक्रमणिका, दन्त्योष्ठ्य-
विधि, कौत्सव्य निघण्टु आदि २ ग्रन्थों
के लेखक भू० पू० प्रोफैसर तथा रिसर्च-
स्कालर डी० ए० वी० कालिज लाहौर,
परीक्षक पंजाब युनीवर्स्टी वा पंजाब
आयुर्वेद विद्यापीठ तथा मंत्री वैद्य
सभा लाहौर ।

अध्यक्ष—
सुधाकर औषधालय मच्छी हट्टा लाहौर ।

प्रकाशक—
ए० डी० वधवा मैनेजर सुधाकर औषधालय
वैक्रमाब्द १९८८

१००० मूल्य ।)

प्रोप्राइटर लाला शामदास वधवा के अधिकार से वधवा प्रिंटिंग प्रेस, मोहनलाल रोड, लाहौर में छपा ।

॥ समर्पणम् ॥

जिन दो कृपालु गुरुओं की असीम कृपा से मेरा इस विद्या में प्रवेश हुआ है उन स्वनाम-धन्य पण्डित मस्तराम जी शास्त्री आयुर्वेद पंचानन तथा योगी रामनाथ जी शास्त्री आयुर्वेदाचार्य, अध्यापक तक्षशिला अष्टांगायुर्वेद विद्यालय रावलपिण्डी के चरण कमलों में यह प्रथम भेंट सादर समर्पित करता हूँ।

प्राक्कथनम् ।

यह बौद्ध वैद्यक तथा जीवक जीवन नाम की पुस्तिका मैंने आयुर्वेद हितैषियों के सम्मुख उपस्थित की है । यह लेख ...ो ग्रन्थ विनय पिटिका के महावग्ग प्रकरण तथा सिंहली ... के मिलिन्द् प्रश्नय और सद्धर्म्म पुण्डरीक के आधार से लिखा गया है ।

ये तीनों ग्रन्थ वैद्यक के नहीं है । ये बौद्धों के धार्मिक ग्रन्थ हैं इनमें जहां कहीं भी आयुर्वेद सम्बन्धी कुछ विषय आया है उसे संगृहीत किया गया है । यह ठीक है कि इससे वैद्य समुदाय को आयुर्वेद ज्ञान वृद्धि में कोई लाभ न होगा तथापि उस समय चिकित्सा में क्या २ वस्तु बर्ती जाती थीं, इस का कुछ ज्ञान अवश्य हो जाता है । भगवान् बुद्ध जिन्हें अहिंसा का अवतार कहा जाता है उन्हों ने भी रोग अवस्था में मांस रुधिर और वसा का प्रयोग करने का आदेश किया है । कुछ २ बातें नवीन भी हैं जैसे कई प्रकार के औषध रखने के अंस बंधक थैलें उन्हों ने बनाये हुए थे । बौद्ध काल में भी आज कल की तरह सिरा बाँध कर सूई द्वारा औषध शरीर में डालते थे ।

जीवक कुमार भृत्य का जीवन तो वास्तव में ही वैद्यों को जीवन देने वाला है । इस की योग्यता से आयुर्वेद और भारत का मुख उज्वल होता है । जो इतिहासानभिज्ञ आयुर्वेद की अवहेलना करते चले आये हैं, उन्हे इस जीवन से ज्ञान हो सकेगा कि बुद्ध भगवान् तथा मगध राज

सेनियबिम्बिसार का राजवैद्य जीवककुमारभृत्य कितना योग्य था। उसने सिर और पेट चीड़ कर शल्य कर्म्म (शस्त्रकर्म्म) औपरेशन किया। उसे इस प्रकार के नील पुष्पों का ज्ञान था जिन्हे संूघने मात्र से ही दस वार विरेचन हो जाता था। उस ने अद्भुत आंजन (मरहम) तय्यार की हुई थीं जिस के एक वार लगाने से भगन्दर का सदा के लिये नाश हो जाता था। वह केवल मुखाकृति देख कर रोग को जान जाता था इत्यादि गुणों से युक्त जीवक का जीवन अवश्य जीवन प्रद होगा।

अन्त में मैं पं० हंसराज जी वैदिक कोष निर्माता पुस्तकाध्यक्ष डी० ए० वी० कालिज लाहौर का अत्यन्त आभारी हूँ; जिन्हों ने मुझे इस ग्रन्थ के लिखने की प्रेरणा की और उचित सामग्री देने में सहायता की।

हरमन ओल्डन बर्ग द्वारा सम्पादित पालि मूल ग्रन्थ विनय पिटिका और टी डब्ल्यू राईहस डेविड द्वारा अनुवादित तथा इसी महाशय द्वारा अनुवादित मिलिन्द प्रश्नय का मुझे बहुत आश्रय मिला है अतः मैं इन दोनों का भी अत्यन्त अनुगृहीत हूँ।

यदि वैद्य समुदाय ने मुझे उत्साह दिया तो मैं शीघ्र ही वेदोक्त आयुर्वेद नामक बड़ा ग्रन्थ आपकी भेंट करूंगा—

सुधाकर औषधालय
लाहौर
कात्तिक अमावसः
दीपमाला १९८८

रामगोपाल

जीवक जीवनम्

एक समय भगवान् बुद्ध कलन्दक निवाप, बेलुघन के राजगृह नामक स्थान में रहते थे। वहीं एक नगर था जिस का नाम वेशालि था जो कि अन्न, धन, जन सब से भरपूर था। उस नगरी में सात हज़ार सात सौ सात मकान थे जो कि सात मंज़ले थे, सात हज़ार सात सौ सात आराम (बगीचे) थे; सात हज़ार सात सौ सात तलाब थे जो कि नलिनी और कुमुदनीयों से भरपूर थे।

इस प्रकार की सुन्दर तथा समृद्धि शालि नगरी में अम्बपालिका नाम की वेश्या थी जो रूप और सौन्दर्य में अनुपम थी। नाचने गाने तथा बजाने में अत्यन्त निपुण थी। इस राज-वेश्या के कारण यह नगरी और भी प्रसिद्धि पा चुकी थी।

एक समय राजगृह पुरी का एक व्यापारी वेशालि नगर में व्यापारार्थ गया। वहां के भवन, बागीचे, ताल तथा वेश्या के अद्भ त सौन्दर्य्य को देख कर चकित हो गया। घर में वापिस जाकर मगध देश के अधिपति सेनोय बिम्बिसार के पास गया और जाकर बोला कि राजन् ! हम को भी अपना नगर आकर्षण शील और सुन्दर बनाना चाहिये। उस के लिये आप एक राज वेश्या का अवश्य प्रबन्ध कीजिये जिस से हमारी नगरी बहुत प्रसिद्ध हो।

व्यापारी के वचन सुन कर महाराज बोला कि भाई तुम भी कोई ऐसी वेश्या को ढूंढों जिसे राज वेश्या बनाया जावे।

उन दिनों राजगृह में शालवती नाम की एक अत्यन्त सुन्दरी, नवयुवति बेश्या रहती थी। व्यापारी ने उसे राज बेश्या बनवा दिया। वह सितार बजाने, नाचने और गाने में बहुत ही चतुर हो गयी थी। बहुत से भोगी लोग उस के पास आया करते थे। इसी प्रकार कुछ समय के अनन्तर वह वेश्या गर्भिणी हो गई।

अपने आप को गर्भिणी जान कर वह मन में सोचने लगी कि लोग अब मुझ से घृणा करेंगे। वह मुझे गर्भिणी जान कर मेरे पास न आया करेंगे। इस बात को अनुभवकर उस ने द्वारपाल को आज्ञा दी, कि जो कोई भी पुरुष मुझे मिलने आवे उसे यह कह देना कि वह बीमार है।

इस प्रकार कुछ मास बीतने पर उसने एक लड़के को जन्म दिया। प्रसव होते ही उसने अपनी एक दासी को आज्ञा दी कि एक टोकरी में रख कर इस लड़के को वहां फैंक आओ जहां मट्टी का ढेर खड़ा है। दासी ने अपनी स्वामिनी की आज्ञा पाकर लड़के को पुरानी टोकरी में रख्ख कर मट्टी के ढेर में दूर जाकर फैंक दिया।

इतने में अभय नामक राजपुत्र अपने नौकरों को साथ लेकर महाराज को मिलने जा रहा था। उसने मार्ग में एक छोटे से बच्चे को चारों ओर कौओं से घिरा देखा और देख कर अपने पुरुषों से बोला कि यह कौओं से घिरा क्या है? लोगों ने कहा महाराज यह एक बच्चा है। राजपुत्र ने पूछा क्या वह जीता है? पुरुषों ने कहा जी हां। तब राजपुत्र ने आज्ञा

दी कि इसे उठालो महिलों में ले चलो, दाईयों के हवाले करो और कहो कि वे इसे पालें और पोसें।

जीवक नाम का कारण

जिस समय राजपुत्र अभय ने पूछा कि क्या यह जीता है तो "तस्स जीवतीति जीवकोति नाममकंसु कुमारेण पोसपितोति कुमारभक्केति नामं अकंसु"।

लोगों ने कहा जीता है इसलिये उन्होंने इसका नाम जीवक डाला। अभय राज कुमार की आज्ञा से इसका पालन पोषण हुआ है इसलिये इसका नाम कुमार भक्क (कुमार भृत्य) रक्खा।

अभय कुमार राजपुत्र से भृत्य (पालित) तथा पोषित किया गया इसलिये कुमार भृत्य नाम पड़ा। दूसरा अर्थ यह है कि कुमारों के पालन पोषण की विधि जिसे कुमार भृत्य विद्या कहते हैं उसका पूरे तौर से जानने वाला कुमार भृत्य है। इसका पालि अपभ्रंश कुमार भक्क है।

कुछ समय के अनन्तर बड़ा होकर जीवक, अभय राजपुत्र को जाकर मिला और पूछने लगा कि भगवन् मेरे माता पिता कौन हैं ? राजपुत्र ने कहा बेटा मैं नहीं जानता कि तेरी

नोटः– सुश्रुत उत्तर तन्त्र अ १ श्लो० ५ डल्हण कृत टीका में कुमार रोग जानने में निपुण जीवक का नाम आता है।

"ये च विस्तरशो दृष्टा इति पार्वतक जीवक बन्धक प्रभृतिभिः"।

माता कौन है; परन्तु मैं तेरा पिता हूँ क्योंकि मैंने ही तुझे पाला है।

इस बात को सुनकर जीवक ने मन में अनुभव किया कि इन राज घरानों में अपना निर्वाह आराम से करना कठिन है अतः मुझे कोई न कोई कला प्राप्त करनी चाहिये जिससे मैं निर्वाह कर सकूं।

* उन दिनों (तक्कसिला) तक्षशिला में जगत् प्रसिद्ध एक वैद्य रहता था। यह जान राजपुत्र को कहे बिना ही वह वहां से चल पड़ा और एक से दूसरे स्थान को घूमता २ तक्षशिला में उस जगत् प्रसिद्ध वैद्य के चरणों में आ उपस्थित हुआ।

वैद्य गुरुदेव के चरणों में जाकर बोला हे गुरो ! मैं आप से वैद्य विद्या सीखनी चाहता हूं। गुरू ने कहा जीवक सीखो। सात वर्ष पर्य्यन्त निरन्तर उसने गुरु से विद्या पढ़ी। जीवक बड़ा

---

* तक्षशिला Texla आजकल जि० रावलपिण्डी सरायें काला स्टेशन के पास है। यह कभी कान्धार देश की राजधानी थी। वाल्मीकि रामायण में भी इसका वर्णन है। महाभारत में लिखा है कि जनमेजय ने तक्षशिला में ही सर्पयज्ञ किया था। स्ट्रेबो, प्लीनो, एरियन आदि प्रसिद्ध युनानी लेखकों ने भी निज पुस्तकों में इसका वर्णन किया है। कौटिल्यार्थ शास्त्र का प्रणेता चाणक्य इसी विश्व विद्यालय University का शिष्य था, कान्धार देशान्तर्गत सालातुर ग्राम निवासी अष्टाध्यायी के प्रणेता भगवान् पाणिनि (पठान) ने भी इसी स्थान में उपवर्ष आचार्य से शिक्षा ली थी। पञ्चायुध-असात मन्त्र-वरण-तिलमुष्टि विनय पिटिका आदि बौद्ध ग्रन्थों में इसका नाम तक्कसिरा वा तक्कसिला आता है।

मेधावी था अतः जो कुछ पढ़ता था उसे सब स्मरण हो जाता था।

एक दिन मन ही मन में जीवक ने विचारा की मैंने सात वर्ष विद्या अध्ययन की है जो कुछ भी मैंने पढ़ा है मैं जानता हूँ परन्तु इस विद्या का अन्त मैं कब पाऊंगा! यह सोचकर वह गुरुदेव के पास गया और वहां जाकर भी यही कहाकि, भगवन् मैंने सात वर्ष विद्या पढ़ी है और जो कुछ मुझे पढ़ाया जाता है मैं भूलता नहीं हूँ परन्तु मैं इस विद्या का अन्त कब पाऊंगा यह आप मुझे बतावें।

यह सुनकर गुरु बोले जीवक! इस तक्षशिला के योजन २ (चार २ कोस) चारों ओर घूम आओ। वहां जाकर हर एक बूटी को खूब ध्यान से देखो जो भी पोदा तुम्हे बिना औषध के गुणों के दिखाई दे उसे उखाड़ कर ले आओ।

जीवक ने ऐसे ही किया। हाथ में खुरपा लेकर तक्षशिला के चारों ओर योजन २ घूम आया परन्तु उसे ऐसा कोई पोदा न मिला जो किसी न किसी रोग का औषध न हो। अन्त में गुरुजी के पास आकर बोला कि मैं आपकी आज्ञानुसार योजन २ भर चारों ओर घूमा हूं; परन्तु मुझे कोई पोदा बिना औषध के नहीं जचा! यह सुनकर गुरु ने उसे कहा जीवक कुमारभृत्य! तुम जाओ तुम ने विद्या समाप्त करली है। यही विद्या तुम्हारे निर्वाह का कारण बनेगी। यह कह कर उसने शिष्य जीवक को कुछ धन रास्ते के खर्च के लिये दिया और आशीर्वाद देकर बिदा किया।

जीवक ने वह थोड़ा सा धन ले लिया और अपने घर राजगृह की ओर चल पड़ा। वह धन थोड़ा थो मार्ग में साकेत (अयोध्या) नामक स्थान तक ही समाप्त हो गया। जीवक ने मन

में विचारा कि मेरा मार्ग अभी बहुत है। रास्ते में जल और अन्न भी नहीं। यहां से बिना धन चलना कठिन है; अतः मुझे यहां ही कुछ धन एकत्र कर लेना चाहिये।

उन दिनों साकेत में एक सेठ की स्त्री सात वर्ष से सिर के रोग से पीड़ित थी। उसके लिये अनेक वैद्य देश देशान्तरों से आचुके थे; परन्तु अपना २ धन लेकर चले जाते थे उसे नीरोग कोई भी न कर सका था।

जीवक साकेत नगरी में प्रविष्ट होते ही पूछने लगा कि क्या कोई यहां रोगी है? लोगों ने सेठ की स्त्री का नाम लिया। वह पूछता २ सेठ के घर पहुंचा और द्वारपाल को बोला कि सेठ की स्त्री को कहो कि एक वैद्य आया है और तुम्हे देखना चाहता है। वह भृत्य अन्तःपुर में गया और वैद्य का वर्णन किया। सेठ की स्त्री ने उसे अन्दर लाने की आज्ञा दे दी। जीवक कुमार भृत्य अन्तःपुर में पहुंचा और उस स्त्री का परीक्षण बहुत ध्यान से किया और देखा कि उसके मुख की आकृति बदल गयी है। जीवक ने एक प्रसृति घी मंगवाने को कहा। दासी एक प्रसृति घी ले आयी और उस में कुछ बूटीयें डालीं। जब वह घी सिद्ध हो गया तो सेठ की स्त्री को सीधा लेटा कर उसकी नासिका में डाल दिया। नासिका छिद्रों में डाला हुआ घी मुख द्वारा बाहर निकल आया। एक ही बार इस प्रकार औषध डालने से सात वर्ष का रोग मूल से नष्ट हो गया। अपने आपको स्वस्थ अनुभव कर सेठकी स्त्री ने जीवक कुमार भृत्य को चार हज़ार क्षपण (उस समय का सिक्का था) भेंट की। इसी प्रकार सेठ की स्त्रीके पुत्र, जामाता और पति ने भी प्रसन्नता से चार २ सहस्र क्षपण भेंट किये। पति ने एक दास, एक दासी तथा घोड़ों सहित एक रथ भी भेंट किया।

इस प्रकार सोलह सहस्र क्षपण, दास, दासी, अश्व सहित रथ को लेकर जीवक राज गृह की ओर चल पड़ा अपनी नगरी में पहुंच कर पहिले पहिल राजपुत्र अभय के पास गया और जाकर बोला कि राजपुत्र यह मेरी योग्यता की प्रथम भेंट है जो १६ सहस्र क्षपग एक दासी, एक दास और एक अश्व सहित रथ है। आपने मुझे जीवन दिया है पाला और पोसा है अतः यह मैं आपके चरणों में उपस्थित करता हूं। राजपुत्र अभय ने कहा कि जीवक आप इस भेंट को अपने पास ही रखिये केवल मेरी तो यह इच्छा है, कि आप मेरे घर में ही रहें कहीं पृथक निवास स्थान न बनावें। जीवक ने राजपुत्र के इस वचन को माना और राज गृह में ही रहना आरम्भ कर दिया।

उन दिनों मगधराज सेनिय बिम्बसार को भगन्दर Fistula का फोड़ा था, इसी के रक्त से कभी २ उस के वस्त्र भर जाते थे, जिन्हें देखकर राणियें कभी २ राजा का उपहास किया करती थीं कि हमारे महाराज को भी मासिक धर्म्म आता है, यह भी कोई बच्चा उत्पन्न करेगा, एक दिन मगधराज नें अभय नामक राजपुत्र को कहा कि मुझे भगन्दर है अतः मेरे लिये किसी योग्य वैद्य को तलाश कीजिये। राज पुत्र बोला महाराज! मेरे पास नवयुवक योग्य वैद्य है वह आप की चिकित्सा करेगा। महाराज मान गये और राजपुत्र ने जीवक कुमार भृत्य को चिकित्सा करने के लिये प्रार्थना की। राजपुत्र की प्रेरणा से जीवक अपनी अंगुली के साथ थोड़ी सी मरहम लगा कर ले गया। महाराज के पास जाकर उस मरहम को

भगन्दर पर लगा दिया। महाराज का भगन्दर एक वार की मरहम लगाने मात्र से ही बिल कुल ठीक हो गया।

नीरोगता की प्रसन्नता में मगधराज बिम्बसार ने अपनी पांच सौ राणियों को हुकम दिया कि तुम अपने २ सब भूषण पहन कर मेरे सामने आओ। राणियों ने ऐसा ही किया। फिर महाराज ने राणियों को आज्ञा दी कि भूषणों को उतार कर एक स्थान पर ढ़ेर लगा दो। उन राणियों ने भूषण उतार कर ढ़ेर लगा दिया। महाराज ने वैद्य जींवक को कहा कि भगवन् मेरी राणियों के ये सब भूषण अब आपके हैं क्यों कि आप ने मुझे जीवन दिया है। जीवक ने कहा महाराज नहीं आप मेरी पदवी को स्मरण कीजिये। तब महाराज बोला प्रिय जीवक! बहुत अच्छा आप मेरी, मेरे अन्तःपुर की और भिक्षुसंघ जिसके अधि पति बुद्ध हैं उस की प्रतिष्ठा कीजिये। जीवक कुमार भृत्य ने मगधराज सेनीय बिम्बिसार की इस आज्ञा को मान लिया।

उस समय राज गृह में एक सेठ रहता था जिस के सिर में सात वर्षों से एक रोग था। बड़े २ प्रसिद्ध वैद्यों ने उस की चिकित्सा की, बहुत २ सी भेंटें ली परन्तु उसे आराम न आया। वैद्यों ने भविष्य बाणी की कई कहते थे पांच और कई कहते थे सात दिन में यह सेठ मर जावेगा।

एक व्यापारी ने जब सेठ की इस अवस्था को सुना तो दुःखित हुआ। वह जानता था कि यह सेठ राजा और प्रजा दोनों की सेवा करता है और बड़ा ही उपयोगी पुरुष है हो न हो तो इस के जीवन की रक्षा करनी चाहिये। उस ने

सोचा कि हमारे यहां एक नवयुवक राज वैद्य जीवक है यदि महाराज से मिलकर उस की चिकित्सा करायी जावे तो आशा है इसे लाभ हो जावे।

यह विचार कर व्यापारी मगधराज के पास पहुंचा और सेठ की अवस्था सुनायी और प्रार्थना की कि यदि आप जीवक को इस की चिकित्सा के लिये आज्ञा दें तो बड़ी कृपा होगी।

महाराज बिम्बिसार ने जीवक को इस सेठ की चिकित्सा के लिये आदेश दिया। राज वैद्य ने भी यह प्रार्थना स्वीकार कर ली। राजाज्ञा पाकर जीवक कुमारभृत्य वहां पहुंच गया जहां वह सेठी रुग्ण पड़ा था। उस के मुख को भली भान्ति देख कर बोला कि सेठ जी यदि मैं तुम्हे नीरोग कर दूं तो मुझे क्या दोगे। सेठी ने कहा भगवन्! यह जो कुछ मेरा है सब आप की भेंट है और मैं आजीवन आप का दास रहूंगा। यह सुनकर जीवक ने कहा कि सेठ जी कहो क्या आप मेरे कथन से सात मास दांई करवट, सातमास बांई करवट और सात मास सीधे लेटे रहोगे। सेठ ने कहा भगवन् अवश्य मैं आप के वचन की पालना करूंगा। तब जीवक ने सेठ को बिस्तर पर लेटा दिया और उसे अच्छी तरह से बांध दिया। बांध कर सिर के नीचे का चमड़ा उस ने काट डाला और दोनो ओर से कुछ २ मांस बाहर निकाला। उन दोनों घावों से दो कीड़े बाहर निकाले। जिन में एक छोटा और दूसरा बड़ा था। कीड़ों को निकाल कर जीवक ने लोगों को दिखाया और कहा कि जो

वैद्य यह कहते थे कि सेठ पाचवें दिन मर जावेगा सच्चे थे क्योंकि बड़ा कीड़ा इसके मस्तिष्क (दिमाग) में पांचवें दिन पहुंच जाता जिस से इस का जीवन असम्भव था। जिन वैद्यों ने सातवें दिन मृत्यु की भविष्यद् बाणी की थी वे भी सच्चे थे क्यों कि दूसरी ओर का छोटा कीड़ा अवश्य सात दिन में ही मस्तिष्क में पहुंच जाता जिस से इस सेठ की मृत्यु अवश्य थी। *

यह कह कर उस ने घावों को बन्द किया और सिर को सी कर ऊपर महरम लगा दी। सात दिन के बाद सेठी ने राजवैद्य को कहा कि भगवन् मैं सात मास एक ओर नहीं लेट सकता। वैद्य ने कहा सेठ जो क्या तुमने आरम्भ में एक ओर सात मास लेटे रहने की प्रतिज्ञा नहीं की थी। सेठ ने कहा मैंने की अवश्य थी परन्तु मैं तो मर जाऊंगा। जीवक ने फिर सात मास उसे दूसरे करवट लेटने को कहा। उस तरफ भी वह सात दिन के बाद घबरा गया और राजवैद्य

---

* भोज प्रबन्ध ग्रन्थ में भी दो काशी के वैद्यों द्वारा भोजराज का कपाल चीर कर मछली निकालने का वर्णन आता है।

"तथापि राजानं मोह चूर्णेन मोहयित्वा शिरःकपालमादायतत्करोटिका पुटे स्थितं शफरी कुलं गृहीत्वा कस्मिंश्चिद् भाजने निक्षिप्य सन्धानकरण्या कपालं यथावदारचय्य संजीविन्या च तं जीवयित्वास्मै तदर्शयताम्। दोनों वैद्यों ने भोजराज को मोह चूर्ण से मूर्छित करके सिरके कपालको पृथक् कर कपाल के भीतर करोटिका में पड़ी मछली को पकड़ किसी वर्तन में निकालकर और जोड़नेवाले यंत्रसे कपालको जोड़कर संजीवनी बूटी से उसे संजीवित करके उस राजा को मछली दिखलायी।

से करवट बदलने की प्रार्थना की। जीवक कुमार भृत्य ने फिर उसे सीधा सात मास लेटने को कहा। वैसे भी वह सात दिन के अनन्तर घबरा गया। अन्त में वैद्य से बार २ उठने की प्रार्थना की। अनुभवी वैद्य बोला कि सेठ जी मैं यदि तुम्हे सात २ मास लेटे रहने को न कहता तो आप सात २ दिन भी न लेटते मैं तो जानता ही था कि आप ३ सप्ताह में ठीक हो जावेंगे।

इस पर २१ दिन के बाद सेठ को खाट छोड़ने की आज्ञा दी और सेठ बिलकुल नीरोग हो गया। नारोगता पर जीवक वैद्य ने फीस मांगी और कहा कि लाओ मुझे अब क्या देते हो। सेठ ने कहा भगवन्! यह जो कुछ मेरा है सब आप लें और मैं आपका दास हूँ। जीवक ने कहा नहीं २ मैं सब कुछ न लूंगा आप एक लक्ष क्षपण राजा बिम्बिसार को और एक लाख क्षपण मेरी भेंट करदें कि मैं इतने में सन्तुष्ट हूं। सेठ ने लाख क्षपण मगधराज और लाख क्षपण जीवक को दिया।

उन दिनों बनारसके एकबड़े सेठ का पुत्रजो*मोखकिका नाम की खेल खेला करता था जिससे उसकी आन्त्रों में गांठें पड़ गयीं थीं (आन्त- गट्ठा बाधो होति येन यागू पि पित्ता न सम्परिणामं गच्छति) जिसके कारण उसे खाया, पीया कुछ भी जीर्ण न होता था। इसी रोग से वह श्रेष्ठी पुत्र शनैः २ पीला, दुर्बल अस्थिपञ्जरावशेष हो गया था।

बनारस का सेठ अपने पुत्र की यह शोचनीय दशा देख

---

* क्रीडा विशेष है दण्डे को पकड़ कर उलट बाजी लगाना (आकाश दण्डं गहीत्वा संपरिवत्तनम्)।

कर सोचने लगा कि यदि मैं मगधराज सेनीय बिम्बिसार को शरण में जाकर, राजवैद्य जीवक कुमार भृत्य को इसकी चिकित्सा के लिये मांग लाऊं तो सम्भव है मेरी कुल का दीपक न बुझे। यही निश्चय करके वह मगधाधिपति के पास पहुंचा और पुत्र के रोग की सब अवस्था सुनाकर जीवक वैद्य की याचना की। महाराज ने दयार्द्र चित्त होकर राजवैद्य को इस सेठ के पुत्र की चिकित्सा के लिये प्रार्थना की। जीवक ने भी राजाज्ञा को शिरोधारण कर बनारस की ओर प्रस्थान किया। बनारस पहुंच उस लड़के का अच्छी प्रकार से परीक्षण किया। परीक्षा के अनन्तर उसने उस लड़के की स्त्री को कमरे में रहने दिया और बाकी सब नर नारियों को बाहर निकाल एक पड़दा डाल दिया। श्रेष्ठि पुत्र को एक थम्भे से बान्धकर भगवान् जीवक ने उसका पेट चीर डाला और गुच्छा गुच्छा हुई २ आन्त्रों को बाहर निकाल लिया। निकाल कर उस लड़के की सामने खड़ी स्त्री को मिली हुई आन्त्र दिखाकर वैद्य बोला कि देवि ! यही कारण था कि तेरा पति रोगी, दुर्बल और पीला था। इसी गुच्छे के कारण वह कुछ न पचा सकता था। कुमार भृत्य ने आन्त्रों के गुच्छे खोल दिये और आन्त्रे उदर में असली जगह पर रख कर पेट सी दिया और ऊपर से मरहम लगा दी। थोड़े समय बाद वह सेठ का लड़का नारोग और स्वस्थ हो गया। अपने पुत्र को नीरोग देखकर सेठ ने सोलह सहस्र क्षपण जीवक की भेंट दी और उसने प्रसन्नता पूर्वक ग्रहण की।

उन दिनों उज्जैनी का राजा पद्योत पाण्डुरोग से पीड़ित था, अपनी रोग निवृत्ति के लिये वह अनेक वैद्यों की प्रचुर धन

दे २ कर चिकित्सा करा चुका था परन्तु किसी से भी उसे आराम न आया था।

मगधराज के राजवैद्य की महिमा सुनकर उसने सेनीय बिम्बिसार के यहां सन्देशा भेजा कि देव! मैं पाण्डु रोग से पीड़ित हूँ और आप अपना राज वैद्य भेज दें। महाराज पगोट का संदेशा पाकर मगधराज ने जीवक कुमार भृत्य को उज्जैनी में जाने को कहा और राजवैद्य भी राज प्रार्थना को स्वीकार कर उज्जैनी में पहुंच गया।

पगोट महाराज की आकृति को देखकर वैद्य ने कहा कि महाराज आपको घी पीना पड़ेगा। राजा ने कहा "मुझे घी अच्छा नहीं लगता, मुझे उससे कुछ घृणा है"। जीवक ने मन में विचारा कि बिना घृत पान के इसे आराम न आसकेगा। अच्छा मैं घी को इस रूप में बनाता हूँ जिस से उसका रंग, गन्ध, और स्वाद एक क्वाथ (काहड़े = Astringent Decoction) का हो। जीवक ने कुछ औषध डाल कर घृत को तय्यार किया और वह एक क्वाथ के रंग, रूप, गन्ध, स्वाद सा मालूम पड़ता था।

यह बनाकर जीवक ने विचारा कि इस घृत को जीर्ण करके महाराज पगोट को वमन अवश्य होगी। यह राजा बड़ा क्रूर है न जाने मुझे मार ही डाले। यह सोच कर औषध देने से पहले ही राजवैद्य महाराज के पास जाकर बोला कि राजन्! हम वैद्य लोग इस अवसर पर कुछ बूटियें उखाड़ते और इकट्ठी करते हैं। आप कृपया अपने घुढ़साल में तथा द्वारों पर आज्ञा भेज दें कि जब भी जिस प्राणी पर, जिस द्वार से जाना चाहूँ मुझे जाने दें।

और जिस द्वार से आना चाहूँ आने दें।

राज वैद्य की बात सुनकर महाराज ने घुड़साल तथा द्वारों पर आज्ञायें भेज दीं कि राजवैद्य को आने जाने में कोई रुकावट न हो। महाराज की आज्ञा भेज देने पर राजवैद्यने क्वाथ रूप में बने हुए घी को पगोट राजा को पान करने को दिया। राजा के औषध पीते ही जीवक बाहर निकल आया और हस्तिशाला की ओर चला गया। उन दिनों भद्रवतिका नाम की एक राजा की हथिनी थी जो दिन में ५० योजन (२०० कोस) की यात्रा कर लेती थी। उस हथिनी पर सवार होकर राजवैद्य राजगृह की ओर भाग निकला।

पीछे महाराज ने जब क्वाथ पिया तो उसे वमन हो गयी। उसने पहचान लिया कि उसे घी दिया गया है इस पर महाराज पगोट बड़ा क्रुद्ध हुआ और जीवक को ढूंढ लाने की आज्ञा दी। दासों ने आकर कहा महाराज वह तो भद्रवतिका हथिनी पर सवार होकर भाग गया है।

राजा पगोट के पास काक नामी एक दास था जो उसे अमानुषी शक्ति ने दिया हुआ था वह एक दिन में ६० योजन चल सकता था। राजा ने काक को आज्ञा दी कि तुम ही जीवक को पकड़ लाने के योग्य हो। परन्तु देखना प्यारे! वैद्य लोग बड़े कुटिल होते हैं उससे कोई वस्तु न ले लेना। इस आज्ञा को पाकर वह चल दिया और मार्ग में ही कासाम्बी नामक स्थान पर काक ने जीवक वैद्य को जा पकड़ा जहां कि वैद्य भोजन पा रहा था। राजवैद्य को काक ने कहा कि आप को महाराज बुलाते हैं।

वैद्य ने कहा ठहरिये मैं भोजन पालूं आप भी खाइये। काक बोला कि मुझे तो राजा ने आप से कुछ लेने को मनह किया है। वह कहता है कि वैद्य लोग कुटिल होते हैं इन की कोई वस्तु न स्वीकार करनी।

उस समय जीवक ने कुछ ओषधियें काट कर रक्खी हुई थीं और वह स्वयं कुछ फल खा रहा था और जल पी रहा था।

जीवक ने कहा प्रिय! जल पीजिये और ये फल खाइये। काक ने सोचा कि जब यह फल और जल स्वयं खा पी रहा है तो मुझे लेने में क्या हानि है इस विचार के अनन्तर उस ने आधा फल खाया और कुछ जल पिया।

उस फल के खाते ही काक की आन्तें खुल गयीं। काक घबराया और बोला कि राज वैद्य! क्या मेरा जीवन बच जावेगा।

वैद्य ने कहा घबरायो नहीं तुम बच जाओगे; परन्तु मैं तुम्हारे साथ वापस नहीं जाऊंगा, क्योंकि राजा पगोट क्रूर है कहीं मुझे मार न डाले। इतना कह कर वह हथिनी उस ने काक को देदी और स्वयं राजगृह की ओर चल पड़ा।

राजगृह में पहुंच कर राज वैद्य ने बिम्बिसार महाराज को सब कथा सुनाई। मगधराज भी यही उचित समझता था जो जीवक ने किया। कुछ दिन बाद पगोट राजा का सन्देशा आया कि वैद्य वर! मैं नीरोग हो गया हूँ आप मेरे यहां आईये, मैं आप को भेंट देनी चाहता हूँ।

राज वैद्य ने जाने से इनकार किया और कहला भेजा की आप का बहुत कृपा है।

एक समय तथागत भगवान् (बुद्ध) के अन्दर कुछ दोष कुपित हो रहे थे । तथागत भगवान् ने शिष्य आनन्द को कोई विरेचन लेने को कहा; क्योंकि उन्हें दोष कुपित से मालूम हो रहे थे । आनन्दभिक्षु जीवकवैद्य के पास पहुंचा और तथागत की अवस्था का वर्णन किया । तब जीवक ने आनन्द को तथागत के शरीर पर कुछ दिन वसा (चर्बी) मलने को कहा । आनन्द नें कुछ दिन चर्बी की मालिश की और फिर जीवक के पास गया कि आप और क्या औषध उचित समझते हैं । तब जीवक ने थोड़े से नीले २ फूल (Lotuses) और कुछ और ओषधियें लीं और वहां चला गया जहां भगवान ! बुद्ध बैठे थे ।

वहां जाकर राज वैद्य ने बुद्ध भगवान् को कहा कि भगवन् ये थोड़े से फूल हैं उन्हें तीन बार सूंघने से आप को तीस शौच (टट्टीयें) होंगे ।

ये फूल भगवान् की भेंट कर प्रदक्षिणा करके जावक वहां से चला गया । जब जीवक द्वार के बाहर आया तो सोचने लगा कि "मया खु भगवतो समतिंसाय विरेचनं दिन्नम्, दोषाभिसन्नो तथागतस्स कायो न भगवन्तं समतिंस खन्तम् विरेचेस्सति, एकून समतिंसखतुं भगवंतं विरेचेस्सति, मैंने भगवान् तथागत को ३० विरेचन दिये हैं परन्तु भगवान् कि काया में दोष विकृत हो चुके हैं अतः २९ विरेचन आयेंगे परन्तु यदि भगवान् स्नान करेंगे तो स्नान से उन्हें एक विरेचन हो जावेगा इस से ३० विरेचन हो जावेंगे ।

इस प्रकार बुद्ध देव को ३० विरेचन हुए । तब जीवक ने

कहा जब तक आप का शरीर स्वस्थ न होजावे आप कठोर पदार्थों का सेवन न करें। तब कुछ कालानन्तर भगवान् का शरीर नीरोग हो गया॥

विनय पिटिका महा वग्ग ८।१

बौद्ध वैद्यकम्

विनयपिटिका महावग्ग खण्ड ६

उन दिनों भगवान् बुद्ध जेत वनान्तर्गत अनाथ पिण्डिका के आराम (बागीचे) सावत्थि स्थान में रहते थे।

उसी स्थान पर बौद्ध भिक्षु, 'सारदिकेन आबाधेन' शरद ऋतु में होने वाले मौसमी ज्वर से (मलेरिया) से रोगी हो गये थे। ज्वराभिभूत वे जो कुछ खाते पीते सब वमन हो जाता था इसी कारण वे दुर्बल और पीत हो गये थे।

उस समय भगवान् बुद्ध ने अपने मन में विचार कर भिक्षुओं के लिये पांच औषधोपयोग का आदेश किया "इमानि खु पञ्च भेषजानि सेवथ इदं सप्पि नवनीतं तैलं मधु फाणितम्" घी, माखन, तेल, मधु और फाणित (राव) और यह भी कहा कि इन्हें ठीक काल में सेवन करना।

उन भिक्षुओं में कुछ एसे रोगी थे जिन्हें स्निग्ध पदार्थ की आवश्यकता थी। भगवान् बुद्ध ने उन्हें रोग काल में रीछ, मछली, गधा, सूअर तथा सूसक (मगर) (अच्छ वसं मच्छवसं सूसक वसं सूकर वसं गर्दभ वसं) इन पांच प्राणियों की वसा (चरबी) का प्रयोग करने की आज्ञा देदी और यह भी कहा कि यदि इस का उलट वा अकाल में प्रयोग करोगे तो तीन (दुकन) पापों के भागी बनोगे।

कुछ रोगी भिक्षुओं को उस समय मूल भेषज की आवश्यकता पड़ी। तब बुद्ध भगवान् ने उन्हें मूल भेषजों की आज्ञा दी। साथ ही भगवान् ने यह भी कहा कि रोग दूर करने और अपने आप को स्वस्थ बनाने में इन का प्रयोग करना हलीद, अदरख, वच, वचत्थ, अतीस, कौड़, खस, भद्रमुत्थां आदि की आज्ञा दी। कई रोगी भिक्षुओं को काषय (काहड़ों) की आवश्यकता थी तब भगवान् नें उन्हें निम्ब कुटज, पक वक, नटमालक (करंजुआ) तथा अन्य जो कषाय थे सब की स्वीकृति दे दी।

कई रोगी भिक्षुओं को पत्रों की आवश्यकता थी तब भगवान् ने कुटज, पटोल, तुलसी, कपासिका (कपास) तथा अन्य पत्र जो रोग में उपयोगी हैं इन की स्वीकृति दे दी।

कई रोगी भिक्षुओं को फलों की आवश्यकता प्रतीत हुई तब भगवान् ने विलंग, पीपल, मरिच, हरीतक (हरीड़) विभीतक (बहेड़ा) आमल (आंवला) गोठ फलं तथा अन्यफल जो रोग निवारणमें उपयोगी हैं उनके सेवन की आज्ञा देदी।

कई रोगी भिक्षुओं को जतु भेषज की आवश्यकता हुई तब भगवान् ने हिंगु, हिंगुजतु, हिंगुसिपाटिकं (कई इसे वंस पत्री कहते हैं) १ तकं (लाख) २ तक पट्टिं, २ तकपन्नि सज्जलसं (१, २, ३, लाक्षा) विशेष और जतु (लाक्षा) जा रोग में उपयुक्त होतो है उन की स्वीकृति दी (ये सब लाक्षा) लाख के भेद हैं।

कई रोगी भिक्षओं को लवणों की आवश्यकता

हुई तब भगवान् ने समुद्दं (समुद्री लवण) काला लोन (काला लवण) सिंधवं (सैंधा) (उब्भिदं) बिड् लवण (सम्भारे सिद्ध पकितं रत्त वन्नं) दर्भ के ढेर में जो पकाया गया है। ऐसा लाल वर्ण वाला तथा अन्य लवण जो रोग में लाभकारी थे उनको भी आचार्य्य ने स्वीकृति दी। (८)

एक समय शिष्यों के शरीर पर खुरण्ड (खरींड) देख कर भगवान् ने कहा कि कण्डू (खुजली) पिडिका (फुंसीयें) आस्साव (आस्राव त्वचारोगों में जल का बहना) थुल्ल कच्छ रोगों में अथवा जिस के शरीर से दुर्गन्ध निकलता हो उन्हें सूखा गोबर, मट्टी तथा रजन निपक्कं की स्वीकृति दी।

एक समय एक शिष्य को अमानुषिक रोग (अमानुस्सिकाबाधो) हो गया। तब भगवान् ने और अन्य बड़ों ने, उस की चिकित्सा की परन्तु वह ठीक न हुआ। अन्त में वह भिक्षु वहां चला गया जहां सूअरों का वध हुआ करता था। वहां जाकर उस ने कच्चा मांस और सूअर का रुधिर पी लिया। इस से उस का रोग शान्त हो गया। भगवान् ने इस को भी रोग काल में स्वीकृति देदी।

एक बार एक भिक्षुक की आंख में रोग हो गया तो भगवान् ने उन्हे अंजन, कालांजनं, रसांजनं, सोतांजन, गेरु, कज्जल तथा आंजन में मिलाने के लिये चन्दन, तगर, अगर तालीस और भद्र मुत्था के प्रयोग की स्वकृति दी। उन दिनों पीठे हुए अंजन को भिक्षु लोग प्यालों वा थालियों में रखते थे। इस प्रकार के अंजन मट्टी वा अन्य चूर्णों से मिल

जाते थे, तब भिक्षओं ने बुद्ध भगवान् से कहा कि भगवन् अंजन इस प्रकार से बिगड़ जाते हैं । यह सुन कर तथागत महाराज ने अंजन रखने के लिये पेटिका की आज्ञा देदी । इस पर छब्बजीय भिक्षु अनेक प्रकार के सोने चान्दी की पेटी बना कर अंजन रक्खा करता था। तब भिक्षुओं ने बुद्ध भगवान् से पूछा कि भगवन्! हम किन पेटियों में अंजन रक्खा करें । भगवान् ने कहा कि आप लोग अस्थि मयं दन्तमयं विषाण मयं नल मयं (नल—नाड़े के) वेणु मयं (बांस के) काट्ठ मयं (लकड़ी के) जतुमयं लाख के) फलमयं (फलों के जैसे बिल्ल आदि) लोह मयं (लोह के) शंखनाभिमयं (शंख के) वकस अंजन के लिये प्रयुक्त कर सकते हो । इन के (अपिधान) ढकने सूत्र के बनाने को आचार्य ने कहा। साथ ही आचार्य ने अंजनिसलाका सुरमचु की आज्ञा दी । ये अस्थि—दन्त—सींग—नल—बांस—लकड़ी—लाख—फल लोह तथा शंख की शलाका रखने की भी आज्ञा दी। शलाका धानीय बनाने की आज्ञा दी; जिस में सुरमचु रक्खे जावें । अंजन और शलाका रखने के लिये अंजन थविकं (अंजन स्थविकं) थैले और थैले को कंधे पर लटकाने के लिये अंस बंधकं को भी आज्ञा देदी।

एक समय पिलिन्द वच्छ नामक भिक्षु को सीसाभताप (शीर्षाभिताप) सिरदर्द होता था। तब भगवान् ने सिर पर तैल लगाने को आज्ञा देदी। इस पर नीरोगता न हुई तब तथागत महाराज ने नस्य (नत्थू कर्म्म नस्यकर्म) नाक

की औषध की आज्ञा भी देदी । तब नासिका में डाला हुआ तैल इधर उधर गिर जाता था तब भगवान् ने नत्थू करणी (यंत्र विशेष जिस से नाक से औषध इधर उधर नहीं जाती थी) रखने की भी आज्ञा दी । इस से भी आराम न आया तब भगवान् नें धूमं पातुं नासिका द्वारा बत्ती बनाकर धूम पान की आज्ञादी इस पर भिक्षु के गले में जलन हो गयी तब भगवान् ने धूम नेतन Pipe में दवाई रख कर पीने की आज्ञा दी । इन के ढकने और थैली के लिये अंस बन्धने की भी आज्ञा दी ।

एक समय पिलिन्द वछ को वात बाध (उदर में वायु) का रोग हो गया । तब वैद्यों ने इसे तैल पिलाने को कहा और तथागत महाराज ने तैलपाक की आज्ञा दे दी । वैद्यों ने कहा कि इस में तीक्ष्ण मद्य मिलानी चाहिये भगवान् बुद्ध ने तीक्ष्ण मद्य की भी आज्ञा दे दी ।

छबजीय भिक्षु बहुत ही तीक्ष्ण मद्य मिलाकर तैल पिया करता था, इस से उसे मद हो जाता था । इस पर भगवान् ने कहा यह धर्म्म विरुद्ध है यदि इस प्रकार के तीक्ष्ण मद युक्त तैल में मद्य का वर्ण, गन्ध तथा रस न प्रतीत होवे तो मैं उस को भी आज्ञा देता हूँ ।

भिक्षुओं ने कहा महाराज हमारे पास तीक्ष्ण मद्य युक्त तैल पड़ा है अब इसे क्या करें, तब भगवान् ने कहा कि इसे मर्दन के काम में ला सकते हैं ।

एक बार पिलिन्द वछ को (अंगवातो होति) आम वात

गंठिया होगया तब भगवान् ने सेद कम्म (स्वेद कर्म) की आज्ञा की। फिर भी आराम न आया तब भगवान् ने सम्भारसेदं (सम्भार स्वेद अनेक प्रकार के पत्र और लताओं से युक्त स्वेद) की आज्ञा दी, इस से आराम न आया। तब महामुनि ने महासेदं = महास्वेद की आज्ञा दी।

इस महा स्वेद से भी आराम न आया तब भगवान् ने भंगोदक का आदेश किया। इस से भी आराम न आया तब बुद्ध भगवान् ने उदककोठ कम्म् दोणिं वा उह्णोदकस्स पूरेत्वा तथा तथा पविसित्वा सेदकम्म करणं अनुजानामिद्रोणि टब्ब Tub उष्णोदकसे बिलकुल भरकर थोड़ा२प्रवेशकरके स्वेद लेना उदक कोठक स्वेद कहाता है। इस की आज्ञा दी इस से पिलिन्द वछ को कुछ आराम हो गया।

एक समय एक भिक्षु को गण्डाबाध गण्ड रोग हो गया था, तब भगवान् ने सथ्थकम्म (शस्त्रकर्म-चीड़ फाड़) की आज्ञा दी। इस के लिये कसावोदक चाहिये था भगवान् ने इस की भी आज्ञा दे दी तब तिलकक्कन (बुद्ध घोष तिलों वाली भूमि कहता है) की आवश्यकता थी तथागत ने उसे भी स्वीकार किया, कबलिका (पुल्टस) व्रण बंधन, पट्टी Bandage की आवश्यकता थी उस की भी आज्ञा दी गई।

जब व्रण पर दाह हुई तो आचार्य ने सासप कुट्टन सर्षप कुट्टन, कुटी हुई सरसों को बुरकाने की आज्ञा दी। व्रण गीला हो गया तब उसे धूमम्, धूनी की आज्ञा दी गयी (व्रण पर जब अधिक मांस हो जावे तो (लोण सख्खरिका) से छिन्दन करने की आज्ञा दी। जब व्रण न भरे तो तेल लगाने,

तेल बहने पर भगवान्‌ने विकासिकं (रूई का फोया) वनस्पति कम्म सब वनस्ति कर्म करने की भी आज्ञा देदी।

एक समय एक भिक्षु को सांप ने काट खाया तब भगवान् ने चार महा विकट अर्थात् गोबर, गोमूत्र, क्षारिक (राख) और मट्टी का प्रयोग करने की आज्ञा दी।

एक समय किसी भिक्षु ने विष खा ली तब भगवान् बुद्ध ने गोवर का क्वाथ पीने की आज्ञा दी।

एक समय एक भिक्षु *घर दिनका नामक (आबाध) रोग से पीड़ित हुआ। तब भगवान् ने सीतालोडिम् (सीता) हल के फाले से लगी हुई मट्टी को जल में डाल कर मथ कर पीने की आज्ञा दी।

एक समय एक भिक्षु दुत्थ गहनिक (विपान गहनिक-पुराणा कब्ज़) से पीड़ित था। तब भगवान् ने आमिसखारं (सुखोदनं पायत्वा तया खारिकया पज्जहरितं खारोदकम्) (कई मांस क्षार और कई जले हुए चावलों की राख का क्वाथ अर्थ करते हैं)। अर्थात् उस क्षारोदक को पीने की आज्ञा दी।

एक भिक्षु को पाण्डुरोग हो गया तब भगवान् ने गोमूत्र में क्वाथ बनाकर पिलाने की आज्ञा दी।

कई भिक्षुओं को छवि दोषाबाध अर्थात् त्वचा के रोग हो गये उन्हें भगवान् ने गंधालेप की आज्ञा दी।

---

* वशी करण समुत्थ रोग।

इंजंकशन का विधान ।

अथ कश्चिद्वैद्यः सर्व व्याधिज्ञः स्यात् ।
स तं जात्यन्धं पुरुषं पश्येत्तस्यैवं स्यात् ॥

अस्य पुरुषस्य पूर्व पापेन कर्मणा व्याधिरुत्पन्नः । ये च केचन व्याधय उत्पद्यन्ते सर्वे चतुर्विधा वातिकाः पैत्तिकाः श्लैष्मिकाः सान्निपातिकाश्च । अथ स वैद्यस्तस्य व्याधेर्व्युपशमनार्थं पुनः पुनरुपायं चिन्तयेत्तस्यैवं स्यात् । यानि खल्विमानि द्रव्याणि प्रचरन्ति न तैः शक्योऽयं व्याधिश्चिकित्सितुं । सन्ति तु हिमवति पर्वत-राजे चतस्र ओषधयः । कतमाश्चतस्रः यद्यथा प्रथमा सर्ववर्णरसस्थानानुगता नाम द्वितीया सर्व व्याधिप्रमोचनी नाम तृतीया सर्व विष विनाशनी नाम चतुर्थी यथास्थानस्थित सुख प्रदानाम । इमाश्चतस्र ओषधयः । अथ स वैद्यस्तस्मिञ्जात्यन्धे कारुण्यमुत्पाद्य तादृशमुपायं चिन्तयेद्येनोपायेन हिमवन्तं पर्वतराजं शक्नुयाद्गन्तुं । गत्वा चोर्ध्वमप्यारोहेदधोऽप्यवतरे त्तिर्यगपि प्रविचिनुयात् । स एवं प्रविचिन्वंस्ताश्चतस्र ओषधीराधयेदाराध्य च कांचिद्दन्तैः क्षोदितां कृत्वा दद्यात् कांचित् पेषयित्वा दद्यात् कांचिदन्यद्रव्य संयोजितां पाचयित्वा दद्यात् कांचिदामद्रव्य संयोजितां कृत्वा दद्यात् कांचिच्छलाकयासिरा स्थानं विद्ध्वा दद्यात् कांचिदग्निना परिदाह्यदद्यात् । कांचिदन्योन्य द्रव्य संयुक्तां यावत्पान भोजनादिष्वपि योजयित्वा दद्यात् । अथ स जात्यन्धः पुरुषस्तेनोपाययोगेन चक्षुः प्रति लभेत ।

यथाहि कश्चिज्जात्यन्धः सूर्येन्दु ग्रह तारकाः ।
अपश्यन्नेवमाहासौ नास्ति रूपाणि सर्वथः ॥ ५४ ॥

जात्यन्धेतु महावैद्यः कारुण्यं संनिवेश्य ह ।
हिमवन्तं स गत्वा च तिर्यगूर्ध्वमधस्तथा ॥ ५५ ॥
सर्ववर्ण रस स्थानागाल्लभत ओषधीः ।
एवमादीश्चतस्रोऽथप्रयोगमकरोत्ततः ॥ ५६ ॥
दन्तैः संचूर्ण्य काञ्चितु पिष्ट्वा चान्यां तथापरां ।
सूच्यग्रेण प्रवेश्याङ्गे जात्यन्धाय प्रयोजयेत् ॥ ५७ ॥
स लब्ध चक्षः संपश्येत् सूर्येन्दु ग्रह तारकाः ॥ ५८ ॥
(सद्धर्म्म पुण्डरीक सूत्रे ओषधीपरिवर्त्तोनाम पञ्चमः)

अर्थ—कोई वैद्य सब रोगों को जानने वाला हो। वह किसी जन्मान्ध को देखे (और कहे) कि इस जन्मान्ध को पूर्व जन्म के पाप कर्मों से यह रोग हुआ है । जो भी कोई व्याधियें हैं वे चार प्रकार की हैं वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक और सांन्निपातिक वैद्य व्याधि को शान्त करने के लिये बार २ उपाय सोचे। जितने ये द्रव्य हैं उनसे इस जन्मान्ध को चिकित्सा नहीं हो सकती। हां पर्वतराज हिमालय में चार ओषधियें हैं। प्रथम सर्व वर्ण रसास्थानानुगता, दूसरी सर्व व्याधि प्रमोचनी, तीसरी सर्व विष विनाशनी, चौथी यथास्थान स्थित सुख प्रदा । वह वैद्य उस जन्मांध पर दया करके ऐसा उपाय सोचे जिससे हिमालय पर्वत पर जासके। पर्वतराज के ऊपर, नीचे, दायें, बायें घूमकर उन चार ओषधियों को ढूंढे। ढूंढकर कुछ ओषधि दान्तों से चबा कर रोगी को देवें। कुछ ओषधियें पीस कर, कुछ और द्रव्यों से मिलाकर कुछ पका कर, कुछ को अपक्क द्रव्यों के साथ मिलाकर देवे, कुछ ओषधियों को सिरा को बींधकर सलाई (सूई के) द्वारा रोगी के शरीर में डाले कुछ को अग्नि से जला कर देवे । कुछ

को परस्पर मिला कर खान और पान में मिलाकर देवे । वह जन्मांध इस विधि से नेत्र पा सकता है।

जिस प्रकार कोई जन्मान्ध सूर्य, चान्द, ग्रह और लाखों तारों को न देखकर रूप कोई नहीं ऐसा कहता है उस रोगी पर महा-वैद्य दया करके हिमालय में इधर उधर घूमकर सर्व वर्ण रसस्थाना नाम आदि चार ओषधियों को ढूंढे। किन्हीं ओष-धियों को दान्तों से चबा कर, किन्ही को पीस कर, किन्हीं को सूई के नाके से जन्मान्ध के अङ्ग में प्रवेश कराके नेत्र दान करे। पीछे वह जन्मान्ध सूर्य, ग्रह, चान्द और तारों को देखता है ।

मिलिन्द प्रश्नय ग्रन्थ क्या है ?

* मिलिन्द प्रश्नय प्रथम शताब्दी वा इसके आरम्भ में लिखा गया। उत्तरीय भारत में संस्कृत वा उत्तरीय प्राकृत भाषा में लिखा गया था। भारत में यह ग्रन्थ सर्वथा लुप्त हो चुका है केवल सिलोन में मिलता है। आरम्भ में पाली और अनन्तर सिंहली भाषा में अनुवादित किया गया है ग्रन्थ प्रामाणिक है ।

---

* मिलिन्द एक युनानी महाराज था जिसका नाम मीनेन्द्र था Baktaria में इस ने युनानी महाराज एलैग्जैंडर द्वारा स्था-पित साम्राज्य की स्थापना की थी। इसी ने ग्रीक युनानी सैनिकों को साथ लेकर भारत में पूर्व युनानियों द्वारा स्थापित राज्य की अधिक वृद्धि की थी। यह ईसा से लगभग दो सौ वर्ष पूर्व राज्य करता था। एलेगजैण्डरीया Alxandria के kalasi नामक स्थान में उत्पन्न हुआ था। अन्त में इसने बौद्ध धर्म को स्वी-कार कर लिया था। इसका भारतीय नाम मिलिन्द रखा गया।

प्रथम १८७० ई० में कोलंबो में सिंहली भाषा वाला ग्रंथ मुद्रित हुआ। महापरि निबानसत्तन ग्रन्थ में बुद्धघोष ने मिलिन्द और *नागसेन के प्रश्नोत्तरों का वर्णन किया है। इसके कुछ वैद्यक वाक्यः—

प्रथम आरम्भ में वैद्य को चाहिये कि रोगी को देखने से पूर्व उसकी आयु का निश्चय कर लेवे मि० प्र० ४। ४। १२॥

हे राजन्! जब किसी मनुष्य को कोई फोड़ा हो जाता है तो वह उस दुःख से बचने के लिये एक वैद्य और एक शल्य चिकित्सक को बुलाता है। वैद्य उसे रोग से छुड़ाने के लिये तेज़ नश्तर को लेकर, डण्डों को आग में रखता है जिससे कि दाह कर्म्म (दाग दे सके), अथवा किसी द्रव्य को पीसता है जिससे कि नमकीन जल में उसको मिला सके। मि० प्र० ४। २। १३।

जब वायु विकृत होती है तो शीत, पित्त, भूख, प्यास अधिक भोजन, अधिक काल तक खड़े रहना, अधिक परिश्रम, अधिक तेज़ चलने अथवा औषध सेवन से वा कर्म्म के फल से होती है।

अतः यह कहना ठीक नहीं कि सब पीड़ायें कर्म्म से ही होती है। हे राजन्! जब पित्त कुपित हो जाता है तो एक दो वा तीनों दोषों से विकृत होता है। जब श्लेष्मा कुपित होता है तो सरदी, गर्मी, खान तथा पान से होता है। जब इन तीन दोषों में से कोई एक भी कुपित हो जाता है तो यह अपनी २ विशेष पीड़ा प्रकट करता है। ४। १। ६३॥

---

* नागसेन वेद पढ़ा हुआ ब्राह्मण था पाटलिपुत्र के पास अशोक आराम का रहने वाला था पीछे बौद्ध हो गया था।

हे राजन् ! यह ठीक है कि जैसे वमन, विरेचन, तथा बस्ति कर्म्म के अनन्तर रोगी को रसायन Tonic औषध देनी चाहिये । ४ । ५ । ७ ।

जिस प्रकार विरेचन देने से पूर्व वैद्य अपने रोगियों को चार और पांच दिन तैल पिलाता है जिससे कि रोगी बलवान् हो सकें । ४ । ५ । २९ ॥

हे राजन् (हिमालय) जादू भरी सैंकड़ों औषधों से भरपूर है । ४ । ८ । १६ ।

हे राजन् ! आठ कारणों से मृत्यु हो सकती है जैसे अधिक वात अधिक पित्त वा अधिक कफ प्रकोप से वा सन्निपात से, सरदी तथा गरमी के परिवर्त्तन से, रक्षा साधन की अपूर्णता से, चिकित्सा से और कर्म्म से । ४ । ८ । ३० ।

जिस प्रकार हे राजन् ! वैद्य वा शल्य चिकित्सक अपने लिये सेवा वा धन देकर एक गुरु धारण करता है और फिर अपने आप को शस्त्र के पकड़ने, घावों के चीरने, चिन्ह लगाने, शोधन करने, सुखाने, मरहम लगाने, वमन, विरेचन तथा अनुवासन का अनुभव प्राप्त कर लेने के बाद रोगियों को नीरोग करने के लिये उद्यत होता है । ६ । १० ॥ मिलिन्द प्रश्नय ॥

हे राजन् ! जो अपने समय से पहले मर जाता है उसके नीचे लिखे कारण ये होंगे :—किसी रोग का आक्रमण, वात प्रकोप, पित्त प्रकोप, कफ प्रकोप, सन्निपात, दोष वैषम्य, रक्षण में असावधानता, रोग चिकित्सा की त्रुटि, भूख, प्यास, अग्नि, जल, तलवार आदि । मि० प्र० ४ । ८ । ४३ ।

हे नागसेन ! पूर्वज वैद्यों के गुरु जैसे नारद, धमन्तरि (धन्वन्तरि), अंगिरस, कपिल, कन्दरगिलात, अतुल, पुब्ब कांकायन (पूर्व कांकायन) ये सब आचार्य रोग सम्बन्ध में पूर्ण ज्ञान रखते थे इनमें प्रत्येक आचार्य ने ग्रन्थ भी बनाये हैं । इति ॥